B.Ed. 2nd Year
Session – 2018-2020
Subject – Pedagogy of History
Course – 7 (A) /Unit – 3(b)
Topic – आगमन-निगमन विधि
(Inductive-Deductive Method)
Lecture No. - 54

Dr. Amod Kumar Sinha
(Assistant Professor)
Department of Education
A.N. D. College
Shahpur Patory
Samastipur

Continued form the previous lecture....

आगमन-विधि के दोष
(Demerits of Inductive Method)

इस विधि के निम्नांकित दोष है -

1. इस विधि के द्वारा शिक्षण में समय व शक्ति दोनों अधिक लगता है।

2. यह विधि छोटे बालकों के लिए उपयुक्त नहीं है।

3. बड़े बालकों में भी यह विधि प्रतिभाशाली बालकों लिए उपयुक्त है। सामान्य-बुद्धि के बालक प्रायः प्रतिभाशाली बालकों के अनुमानों को आँख बंद कर स्वीकारते हैं।

4. यदि छात्र किसी गलत सामान्य नियम की ओर पहुँच जाए तो सत्य की ओर लाने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

1. इस विधि द्वारा केवल सामान्य नियमों की खोज की जा सकती है। उन नियमों की सत्यता की जाँच एवं अनुप्रयोगों के लिए निगमन-विधि की आवश्यकता पड़ती है।

निगमन-विधि (Deductive Method)

यह विधि आगमन-विधि के विपरीत है। अर्थात्त यह सामान्य से विशिष्ट , सूत्र से उदाहरण, अज्ञात से ज्ञात, अमूर्त से मूर्त की ओर अग्रसर होता है। इस विधि का प्रयोग करते समय शिक्षक छात्रों के सामने पहले किसी सामान्य नियम को प्रस्तुत करता है। तत्पश्चात उस नियम की सत्यता को प्रमाणित करने के लिए विभिन्न उदाहरणों को प्रस्तुत करता है।

यह विधि आत्मसातीकरण एवं सूचना प्रसंस्करण पर आधारित है। यह विधि विज्ञान , सामाजिक विज्ञान, गणित, व्याकरण आदि के शिक्षण की प्रमुख विधियों में है।

निगमन-विधि को सोपान
(Steps of Deductive Method)

इस विधि से शिक्षण हेतु निम्नलिखित सोपान या चरण हैं -

1. **सामान्य नियमों का प्रस्तुतीकरण** ‘ इस सोपान में शिक्षक छात्रों के सामने प्रकरण से संबंधित सामान्य नियमों को क्रम में प्रस्तुत करता है।

2. **उदाहरणों के द्वारा विश्लेषण** ‘ इस सोपान में शिक्षक द्वारा प्रस्तुत नियमों की सत्यता की परख या समझ के लिए विभिन्न उदाहरण प्रस्तुत किए जाते हैं।

3. **संबंधों की स्थापना** - शिक्षक स्वयं द्वारा प्रस्तुत किए गए नियमों में तर्कयुक्त संबंधों या सूत्रों की स्थापना करता है।

निगमन-विधि के गुण
(Merits of Deductive Method)

इस विधि के निम्नांकित गुण हैं -

1. यह विधि लगभग सभी विषयों के शिक्षण के लिए उपयुक्त है।

2. यह शिक्षक-केन्द्रित उपागम है।

3. इस विधि के द्वारा सामान्य नियम को शुद्ध रूप में प्रस्तुत किया जाता है। अशुद्ध रूप के सम्मिलित होने का प्रश्न ही नहीं उठता।

4. यह विधि प्रतिभाशाली एवं सामान्य बालकों के बीच भेद -भाव नहीं करता। अर्थात्त सभी छात्रों को एक साथ इस विधि से पढ़ाया जा सकता है।

5. इस विधि के प्रयोग से समय व शक्ति दोनों की बचत होती है।

6. यह एक सत्यापन की विधि है।

Continued to the next lecture....